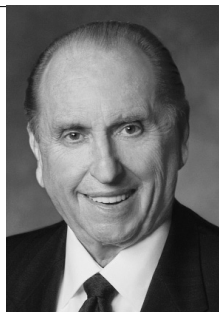

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

बचाने की हमारी जिम्मेदारी

अंतिम-दिनों के संतों के लिए, हमारे उन भाइयों और बहनों को बचाने की आवश्यकता है, जो किसी भी कारण से, गिरजे की गतिविधि के मार्ग से दूर हो गए हैं, अत्यन्त विशेष है । क्या हम इस तरह के लोगों को जानते हैं जिन्होंने कभी सुसमाचार को अपनाया था ? यदि ऐसा है, तो उन्हें बचाने की हमारी क्या जिम्मेदारी है ?

वृद्ध, विधवा, और बीमारों के मध्य खोए हुओं पर विचार करें । अधिकतर वे मुरझाए और सुनसान वीराने के एकांत में जिसे अकेलापन कहते हैं, में पाए जाते हैं । जब युवावस्था चली जाती है, जब स्वास्थ्य गिरने लगता है, जब शक्ति घटने लगती है, आशा की ज्योति मंद होकर टिमटमाने लगती है, उन्हें उस हाथ द्वारा राहत और सर्मथन मिल सकता है जो मदद करता है और वह हृदय जो दया जानता है ।

अवश्य ही, अन्य हैं जिन्हें बचाये जाने की जरूरत है । कुछ पाप से संघर्ष कर रहे हैं जबकि अन्य भय या लापरवाही या अज्ञानता में भटक रहे हैं । कोई भी कारण हो, उन्होंने अपने आप को गिरजे की सक्रियता से अलग कर लिया है । और वे तब तक निश्चितरूप से खोए रहेंगे जब तक हम—गिरजे के सक्रिय सदस्य में—राहत और बचाने की इच्छा न जागे ।

किसी को मार्ग दिखाना हो

कुछ समय पहले मुझे एक पुरूष द्वारा लिखा पत्र मिला जो गिरजे से भटक गया था । यह हमारे बहुत से सदस्यों को दर्शता है । वह कैसे असक्रिय हुआ था का वर्णन करने के बाद, उसने लिखा थाः

''मेरे पास बहुत कुछ था और अब बहुत कम है । मैं दुखी हूं और महसूस करता हूं मानो मैं हर काम में असफल हो रहा हूं । सुसमाचार ने मेरे हृदय को कभी नहीं छोड़ा था, यद्यपि यह मेरे जीवन से चला गया था । मैं आपकी प्रार्थनाएं चाहता हूं ।

''कृपया उन्हें न भूलें जो यहां बाहर हैं—खोए हुए अंतिम-दिनों के संत । मैं जानता हूं गिरजा कहां है, लेकिन कभी-कभी मैं सोचता हूं मुझे किसी अन्य की जरूरत है जो मुझे मार्ग दिखाए, मुझे उत्साहित करे, मेरे भय को दूर करे, और मेरे लिए गवाही दे ।''

जब मैं इस पत्र को पढ़ रहा था, मेरे विचार विश्व की एक महान कला दीर्घा—लंदन में महशूर विक्टोरिया और अलबर्ट मुजियम की ओर चला गया जहां मैं गया था । वहां, शानदार फ्रैम में, 1831 की जोसफ मालॉर्ड विलियम टर्नर की बेजोड़ चित्रकारी लगी थे । चित्रकारी में घने काले बादल और खतरे और मृत्यु का आभास कराता प्रचंड आशांत सागर दिखाया गया था । दूर फंसे एक जहाज से प्रकाश की एक किरण चमक रही थी । सामने के मैदान में, आती लहरों के पानी से बने झाग पर एक विशाल जीवन रक्षक नाव ऊंची उछल रही थी । किनारे पर एक पत्नी और दो बच्चे, बारिश में भीगे और हवा से थप्पड़े खाये खड़े थे । वे उत्सुकता से सागर की ओर देख रहे थे । अपने मन में मैंने चित्रकारी को नाम दे दिया । मेरे लिए यह *बचाव के लिए* बन गई ।[1]

जीवन की आंधियों के बीच, खतरा घात लगाए रहता है । पुरूष और स्त्रियां, लड़के और लड़कियां स्वयं को फंसा और विनाश होते हुए पाते हैं । कौन जीवन रक्षक नाव का मार्गदर्शन करेगा, घर और परिवार के आराम को पीछे छोड़ेगा, और बचाव के लिए आगे आएगा ?

हमारा कार्य अजय नहीं है । हम प्रभु के सन्देश वाहक हैं; हम उसकी मदद के अधिकारी हैं ।

स्वामी की सेवकाई के दौरान, उसने गलील में मछुवारों को उनके

जालों को छोड़कर और उसका अनुयायी होने के लिए उसने बुलाया, घोषणा की, ''मैं तुम को मनुष्यों को पकड़नेवाले बनाऊंगा ।''[2] क्या हम मनुष्यों को पकड़नेवाले पुरूष और स्त्रियों के साथ शामिल हो सकते हैं, ताकि हम से जो भी हो सके उस मदद को दे सकें ।

हमारा कार्य उनको बचाने जाना है जिन्होंने सुरक्षा की सक्रियता को छोड़ दिया है, ताकि उन्हें प्रभु के मेज पर उसके वचन को ग्रहण करने के लिए लाया जा सके, वे उसकी आत्मा की संगति का आनंद ले सकें और ''अजनबी और विदेशी न रहें, परन्तु सन्तों के अनुयायी नागरिक, और परमेश्वर के घराने के हो जाएं ।''[3]

प्रेम के सिद्धांत

मैंने पाया है कि दो मूलभूत कारण सक्रियता में वापस आने और व्यवहार, आदतों, और कार्यो में बदलाव के लिए मुख्यरूप से जिम्मेदार होते हैं । पहला, लोग वापस आते हैं क्योंकि किसी ने उन्हें उनकी अनंत संभावनाओं को दिखाया है और उन्हें पाने में उनकी मदद की है । कम सक्रिय लोग अधिक समय तक इंतजार नहीं कर सकते यदि एक बार वे देख लेते हैं कि उत्कृष्टता उनकी पहुंच में है ।

दूसरा, अन्य प्रियजनों के कारण वापस लौटते हैं या ''सन्तों के साथ अनुयायी नागरिक'' जिसने उद्धारकर्ता की शिक्षा का अनुसरण किया, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम किया है,[4] और अन्यों के सपनों को पूरा करना और उनकी अभिलाषाओं को सच होने में मदद की है ।

इस प्रक्रिया में प्रेम का सिद्धांत—उत्प्रेरक रहा है—और निरंतर रहेगा ।

सही मायने में, टर्नर की चित्रकारी में सागर की प्रचंड आंधी में फंसे वे लोग हमारे कम-सक्रिय सदस्यों की तरह हैं जो बचाये जाने के लिए जीवन रक्षक नावों की प्रतिक्षा करते हैं । उनके हृदय मदद पाने के इच्छुक होते हैं । माता और पिता अपने बेटों और बेटियों के प्रार्थना करते हैं । पत्नियां स्वर्ग से अपने पतियों की मदद के लिए प्रार्थना करती हैं । कभी-कभी बच्चे अपने माता-पिता के लिए प्रार्थना करते हैं ।

यह मेरी प्रार्थना है कि हम में कम सक्रिय को बचाने और यीशु मसीह के सुसमाचार के आनंद में वापस लाने की इच्छा हो, ताकि वे भी उस पूर्ण संगति में भाग ले सकें जो दी जाती है ।

हम उन खोये हुओं को बचाने पहुंचें जो हमारे आस-पास हैंः वृद्ध, विधवा, बीमार, अपंग, कम सक्रिय, और वे जो आज्ञाओं का पालन नहीं कर रहे हैं । हम उन तक उस हाथ को बढ़ायें जो मदद करता है और उस हृदय को जो दया जानता है । ऐसा करने से, हम उनके हृदयों में खुशी लाएंगे, और हम उस समृद्ध संतुष्टि को अनुभव करेंगे जो हमें तब मिलती है जब हम अनंत जीवन के मार्ग में दूसरों की मदद करते हैं ।

विवरण

1. चित्रकारी का पूरा शीर्षक *Life-Boat and Manby Apparatus Going Off to a Stranded Vessel Making Signal (Blue Lights) of Distress* है ।
2. मत्ती 4:19 ।
3. इफिसियों 2:19 ।
4. देखें मत्ती 22:39 ।

इस शिक्षा से संदेश

जिनसे आप भेंट करते हैं उनसे पूछने का विचार करें कि क्या वे किसी को जानते हैं जो गिरजा आने के लिए संघर्ष कर रहा है । आप एक व्यक्ति को चुन सकते हैं और प्रेम प्रकट करने के तरीकों की चर्चा कर सकते हैं, जैसे उसे पारिवारिक घरेलु संध्या में भाग लेने या भोजन पर आने का निमंत्रण देना ।

युवा

जेन का उपहार

जोसी एस. किलपैक द्वारा

मैंने हाई स्कूल के अपने दूसरे वर्ष में कई गलत निर्णय लिए थे । वे निर्णय गंभीर परिणाम और दुख की ओर ले गए, और मैंने गर्मियों की छुट्टियों का उपयोग बदलाव करने का निश्चय किया । जब हाई स्कूल दोबारा आरंभ हुआ, बुरी संगत जो मेरा वापस आने का इन्तजार कर रही थी से बचने के लिए मैं दोपहर का खाना बाथरूम या खाली गलियारे में खाती थी ।

मैंने कभी अकेला नहीं महसूस नहीं किया ।

फिर परमेश्वर ने मुझे एक उपहार दियाः उसने मेरे लिए जेन को भेजा । उसने कभी भी मेरी गलतियों को नहीं देखा बल्कि हमेशा मुझे सही दिशा में चलने के लिए उत्साहित करती रही । जानते हुए कि वह स्कूल में है उसने धर्मशास्त्र अध्ययन करने और मेरी गवाही का पोषण करने में मेरी मदद की । पढ़ाई पूरी होने के समय तक, मैंने स्वयं को साबित कर दिया था कि मैं बदलाव के लिए समर्पित थी ।

कभी-कभी मुझ आश्चर्य होता है मैं कहां होती यदि जेन मुझ तक नहीं पहुंचती । क्या उसके बिना मैं अपने सिद्धांतों से लगी रहती ? सौभाग्य से, मैं कभी नहीं जान पाऊंगी क्योंकि वह मेरे साथ संपूर्ण हृदय से, मेरी मदद के लिए तैयार थी ।

बच्चे

बचाव के मार्ग

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन सीखाते हैं कि हमें वृद्धों विधवाओं, बीमार, कम सक्रिय, सहित उन तक पहुंचना है जिन्हें अतिरिक्त मदद की जरूरत है । उन लोगों के विषय में सोचें जो किसी सेवा का उपयोग कर सकते हैं ।

इनमें से कुछ लोगों की मदद के लिए विचारों को लिखें या चित्र बनाएं । विचारों को सोचने के लिए आप अपने माता-पिता की मदद ले सकते हो और फिर इस सप्ताह एक का चुनाव कर कोशिश कर सकते हो ।

© 2013 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/13 । अनुवाद अनुमतिः 6/13 । *First Presidency Message, October 2013* का अनुवाद । Hindi । 10670 294

यीशु मसीह का पवित्र सेवकाईः सृष्टिकर्ता

इस सामाग्री को पढ़ें, और जैसा उचित हो, बहनें जिन से आप भेंट करती हैं के साथ इस पर चर्चा करें । अपनी बहनों को मजबूत और सहायता संस्था को अपने जीवन का सक्रिय हिस्सा बनाने में मदद के लिए प्रश्नों का प्रयोग करें । अधिक जानकारी के लिए, को देखें ।

विश्वास, परिवार, सहायता

यह उद्धारकर्ता की सेवकाई के पहलुओं का वर्णन करने की श्रंखला में पहला भेंट करने वाला शिक्षा संदेश है ।

यीशु मसीह ''ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की थी'' (3 नफी 9:15) । उसने ऐसा पौरोहित्य की शक्ति से, हमारे स्वर्गीय पिता के निर्देशन के अंतर्गत किया था (देखें मूसा 1:33) ।

''हमें कितना आभारी होना चाहिए कि एक बुद्धिमान सृष्टिकर्ता ने पृथ्वी की रचना की और हमें यहां रखा,'' अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन ने कहा था, ''... ताकि हम परिक्षा के समय का अनुभव कर सकें, उसे पाने का योग्य होने का एक ऐसा अवसर जिसे परमेश्वर ने हमें देने के लिए तैयार किया है ।''[1] जब हम अपनी स्वतंत्रता का उपयोग परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने और पश्चाताप करने के लिए करते हैं, हम वापस जाकर उसके साथ रहने के योग्य हो जाते हैं ।

सृष्टि के विषय में, अध्यक्ष डिटयर एफ. उकडोर्फ, प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार, ने कहा थाः

''हमारे कारण उसने विश्व की रचना की थी ! ...

''यह मनुष्य का विरोधाभास हैः परमेश्वर की तुलना में, मनुष्य कुछ नहीं है; फिर भी हम परमेश्वर के लिए सबकुछ हैं ।''[2] यह जानते हुए कि यीशु मसीह ने हमारे लिए पृथ्वी की रचना की थी क्योंकि हम स्वर्गीय पिता के लिए सबकुछ हैं उनके प्रति हमारे प्रेम में वृद्धि होने के लिये मदद मिल सकती है ।

धर्मशास्त्रों से

यूहन्ना 1:3; इब्रानियों 1:1–2; मूसायाह 3:8; मूसा 1:30–33, 35–39; अब्राहम 3:24–25

हमारे इतिहास से

हमें परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है (देखें मूसा 2:26–27), और हमारे भीतर दिव्य योग्यता है । भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने सहायता संस्था की बहनों को ''[उनके] सौभाग्य को जीने का'' उपदेश दिया था ।[3] बुनियाद के तौर पर उस प्रोत्साहन के साथ, अंतिम-दिनों के संतों के यीशु मसीह के गिरजे में बहनों को उनके लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करके उनकी दिव्य योग्यता को जीना सीखाया जाता है । ''जब वे समझती पाती हैं कि वे कौन है वे प्रेम और पोषण करने की क्षमता की प्रकृति के साथ वास्तव में—परमेश्वर की बेटियां हैं—वे पवित्र स्त्री के रूप में अपने संभावना तक पहुंचती हैं ।''[4]

''आपको अब एक ऐसी परिस्थिति में रख गया है जहां पर आप उस हमदर्दी के साथ कार्य कर सकती हैं जिसे परमेश्वर ने आपके हृदय में डाला है,'' भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कहा था । ''यदि आप इन नियम कितने महान और महिमापूर्ण के अनुसार जीते हैं!—यदि आप अपने सौभाग्य के अनुसार जीती हो, स्वर्गदूत तुम्हारे साथी होने से पीछे नहीं हट सकते ।''[5]

विवरण

1. Thomas S. Monson, "The Race of Life," *Liahona,* मई 2012, 91 ।
2. Dieter F. Uchtdorf, "You Matter to Him," *Liahona,* नवं. 2011, 20 ।
3. Joseph Smith, *Daughters in My Kingdom: The History and Work of Relief Society* (2011), 171 में ।
4. *Daughters in My Kingdom,* 171 ।
5. Joseph Smith, in *Daughters in My Kingdom,* 169 ।

मैं क्या कर सकती हूं ?

1. कैसे हमारी दिव्य प्रकृति को समझकर हम उद्धारकर्ता के प्रति अपने प्रेम को बढ़ा सकते हैं ?

2. हम कैसे परमेश्वर की रचना के लिए आभार व्यक्त कर सकते हैं ?

© 2013 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/13 । अनुवाद अनुमतिः 6/13 । *Visiting Teaching Message, October 2013* का अनुवाद । Hindi । 10670 294